Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AFMA–108

M.A. (Final) Examination, 2023

HINDI

Paper - IV **(घ)**

(नई कविता)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) अज्ञेय की कविता 'प्रातः संकल्प' के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

   (ii) अज्ञेय के काव्य बिम्बों का वैशिष्टय स्पष्ट कीजिए।

   (iii) सर्वेश्वर की कविता 'भूख' के मर्म को उद्‌घाटित कीजिए।

(iv) 'सर्वेश्वर के काव्य में वैचारिक संवेदना पर्याप्त मात्रा में मिलती है।' स्पष्ट कीजिए।

(v) 'केदार नाथ सिंह ग्राम्य चेतना के कवि हैं।' सप्रमाण उत्तर दीजिए।

(vi) केदार नाथ सिंह के 'मातृभाषा' के बारे में विचार स्पष्ट कीजिए।

(vii) शमशेर काव्य की विचार-भूमि क्या है ?

(viii) 'निराला के प्रति' कविता के सम्बन्ध में टिप्पणी लिखिए।

(ix) रघुवीर सहाय की काव्य भाषा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(x) रघुवीर सहाय के काव्य का रचनात्मक लक्ष्य क्या है ?

खण्ड–ब

2. कितनी दूरियों से कितनी बार
कितनी डगमग नावों में बैठकर
मैं तुम्हारी ओर आया हूँ
ओ मेरी छोटी-सी ज्योति!
कभी कुहासे में तुम्हें न देखता भी
पर कुहासे की ही छोटी-सी रुपहली झलमल में
पहचानता हुआ तुम्हारा ही प्रभा-मण्डल।
कितनी बार मैं,
धीर, आश्वश्त, अक्लान्त–
ओ मेरे अनबुझे सत्य! कितनी बार .....

3. वज्र गिराओ जब-जब तुम,
मैं खड़ा रहूँ यदि सीना ताने,
नर्क अग्नि में मुझे डाल दो
फिर भी जिऊँ स्वर्ग-सा माने,
मेरे शौर्य और साहस को
करुणामय हों तो सराहिए
चरणों पर गिरने से मिलता है
जो सुख, वह नहीं चाहिए।

4. पर चिन्ता की कोई बात नहीं
यह बाजारों का समय है
और वहाँ किसी रहस्यमय स्रोत से
मैं हमेशा मौजूद हूँ
पर अपराध क्षमा हो प्रभु,
और यदि मैं झूठ बोलूँ
तो जलकर हो जाऊँ राख
कहते हैं इसमें—
आपकी भी सहमति है।

5. वही उम्र का एक पल कोई लाए
तड़पती हुई-सी ग़ज़ल कोई लाए
हक़ीकत को लाए तखैयुल से बाहर
मेरी मुश्किलों का जो हल कोई लाए
कहीं सर्द खूँ में तड़पती है बिजली
ज़माने का रद्दोबदल कोई लाए
उसी कम-निगाही को फिर सौंपता हूँ
मेरी जान का क्या बदल कोई लाए।

6. मैं भारत गुण-गौरव गाता!
श्रद्धा से उसके कण कण को
उन्नत माथ नवाता।
प्रथम स्वप्न-सा आदि पुरातन,
नव आशाओं से नवीनतम,
प्राणाहुतियों से युग-युग की
चिर अजेय बलदाता!

7. अब कोई मरता है तो लोकतंत्र में वह

दरअसल हत्या होती है

राजा अब कहीं अधिक रक्षित हैं

वे या तो मरे हैं बूढ़े हो

या बूढ़े होकर भी जिए जाया करते हैं

मरते हैं युवा युद्ध क्षेत्र में जो राजा ने

बहुत दूर-दूर फैलाकर रखा है

अपने से बहुत दूर जनता के बहुत पास

एक घनी बस्ती में चुनकर गरीब लोग

मार दिए जाते हैं राजा को बनाए रखने के लिए आज

8. कुछ भी रचो सबके विरुद्ध होता है

इस दुनिया में जहाँ सब सहमत हैं

क्या होते हैं मित्र कौन होते हैं मित्र

जो यह जरा-सी बात नहीं जानते

अकेले लोगों की टोली

देर तक टोली नहीं रहती

वह बिखर जाती है रक्षा की खोज में

रक्षा की खोज में पाता है हर एक अपनी-अपनी मौत

खण्ड– स

9. अज्ञेय के काव्य की भाषा और शिल्पगत विशेषताओं की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

10. 'केदारनाथ सिंह की कविताओं में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है।' सप्रमाण उत्तर दीजिए।

11. सर्वेश्वर के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

12. वस्तु एवं शिल्प की दृष्टि से रघुवीर सहाय के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।